चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समस्त हरियाणा न्यूज	18.11.2026	--	--

हकृवि की मूंग की उन्नत किस्मों को किसानों तक पहुंचाने के लिए निजी कंपनी से किया समझौता

समस्त हरियाणा न्यूज



हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित उन्नत किस्मों के बीजों की मांग निरंतर बढ़ रही है। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित अधिक उत्पादन क्षमता, बेहतर गुणवत्ता और रोग प्रतिरोधक गुणों से युक्त किस्में किसानों के बीच लोकप्रिय हो रही हैं। देशभर के किसानों तक इन उन्नत किस्मों के बीज पहुंचाने के उद्देश्य से विश्वविद्यालय विभिन्न निजी बीज कंपनियों के साथ समझौता ज्ञापन कर रहा है। इसी कड़ी में निजी क्षेत्र की कंपनी मजेस्टिक इंपैक्स, गुवाहाटी ने भी विश्वविद्यालय की उन्नत किस्मों के बीजों के संबंध में समझौता किया है। कुलपति प्रो. बलदेव राज कम्बोज ने बताया कि विश्वविद्यालय किसानों को जलवायु अनुकूल, अधिक उत्पादन देने वाली तथा रोग प्रतिरोधी फसल किस्में उपलब्ध कराने के लिए निरंतर अनुसंधान एवं विकास कार्य कर रहा है। विश्वविद्यालय का प्रयास है कि अनुसंधान के माध्यम से विकसित उन्नत किस्मों का लाभ देश के अधिक से अधिक किसानों तक पहुंचे। इसके लिए निजी बीज कंपनियों के साथ समझौते किए जा रहे हैं, ताकि उन्नत किस्मों के गुणवत्तापूर्ण बीजों का उत्पादन एवं वितरण व्यापक स्तर पर किया जा सके। उन्होंने बताया कि मूंग की एमएच 1772 और एमएच 1142 किस्में कम अवधि में पककर तैयार होने, अच्छी उत्पादन क्षमता तथा विभिन्न रोगों के प्रति प्रतिरोधक क्षमता के कारण किसानों के लिए उपयोगी साबित होंगी।

इन अधिकारियों ने किए हस्ताक्षर

कुलपति प्रो बलदेव राज कम्बोज की उपस्थिति में विश्वविद्यालय की ओर से अनुसंधान निदेशक डॉ राजबीर गर्ग तथा कंपनी की तरफ से एग्जीक्यूटिव मेंबर नीरज अग्रवाल ने हस्ताक्षर किए।

मूंग की वैरायटी एमएच-1772 व एमएच 1142 की खासियत

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने बताया कि मूंग की एमएच 1772 किस्म को भारत के उत्तर-पूर्वी मैदानी क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड, पश्चिम बंगाल और असम में खरीफ मौसम के दौरान खेती के लिए अधिसूचित किया गया है। इसी प्रकार मूंग की एमएच 1142 किस्म को भारत के उत्तर-पश्चिमी एवं उत्तर-पूर्वी मैदानी क्षेत्रों में खरीफ मौसम के दौरान खेती के लिए अधिसूचित किया गया है। यह दोनों किस्म अधिक उपज देने वाली एवं रोग प्रतिरोधी किस्म है, जो विभिन्न राज्यों में 63-70 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। पौधों की बौनी प्रकृति के कारण यह किस्में गिरने (लॉजिंग) के प्रति प्रतिरोधी है। इनकी फलियां चटककर बिखरने के प्रति भी प्रतिरोधी हैं। यह किस्में मूंगबीन पीला मोजेक विषाणु, येलो मोजाइट, उड़द पति सिकुड़न विषाणु तथा पत्ती मरोड़ विषाणु के प्रति प्रतिरोधी है। इसके अतिरिक्त इनमें सर्कोस्पोरा पत्ती धब्बा रोग, एन्थ्रेक्नोज, जड़ सड़न, जीवाणु पत्ती धब्बा रोग तथा मैक्रोफोमिना ब्लाइट के प्रति मध्यम स्तर की प्रतिरोधक क्षमता है। इन किस्मों में सफेद मक्खी, थ्रिप्स, फली के कीट तथा फली छेदक कीटों का प्रकोप भी पहले की किस्मों की तुलना में कम पाया जाता है। विभिन्न राज्यों में एमएच 1772 व एमएच 1142 की औसत उपज 13 व 12 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है, जबकि अधिकतम संभावित उपज 22 क्विंटल व 20 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक हो सकती है। इस अवसर पर ओएसडी डॉ. अतुल ढींगड़ा, कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. रमेश गोयल, डॉ. एसके पाहुजा, डॉ. एसके तेहलान, भौतिया एडवाइजर डॉ. संदीप आर्य, डॉ. विरेन्द्र मोर, डॉ. योगेश जिंदल, डॉ. अनुराग व डॉ. पवन उपस्थित रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पाठकपक्ष	19.11.2026	--	--

हकृवि की मूंग की उन्नत किस्मों को किसानों तक पहुंचाने के लिए निजी कंपनी से किया समझौता

-पाठकपक्ष न्यूज-

हिसार, 19 नवम्बर : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित उन्नत किस्मों के बीजों की मांग निरंतर बढ़ रही है। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित अधिक उत्पादन क्षमता, बेहतर गुणवत्ता और रोग प्रतिरोधक गुणों से युक्त किस्में किसानों के बीच लोकप्रिय हो रही हैं। देशभर के किसानों तक इन उन्नत किस्मों के बीज पहुंचाने के उद्देश्य से विश्वविद्यालय विभिन्न निजी बीज कंपनियों के साथ समझौता ज्ञापन कर रहा है। इसी कड़ी में निजी क्षेत्र की कंपनी मजेस्टिक इंपैक्स, गुवाहाटी ने भी विश्वविद्यालय की उन्नत किस्मों के बीजों के संबंध में समझौता किया है।

कुलपति प्रो. बलदेव राज काम्बोज ने बताया कि विश्वविद्यालय किसानों को जलवायु अनुकूल, अधिक उत्पादन देने वाली तथा रोग प्रतिरोधी फसल किस्में उपलब्ध करवाने के लिए निरंतर अनुसंधान एवं विकास कार्य कर रहा है। विश्वविद्यालय का प्रयास है कि अनुसंधान के माध्यम से विकसित उन्नत किस्मों का लाभ देश के



अधिक से अधिक किसानों तक पहुंचे। इसके लिए निजी बीज कंपनियों के साथ समझौते किए जा रहे हैं, ताकि उन्नत किस्मों के गुणवत्तापूर्ण बीजों का उत्पादन एवं वितरण व्यापक स्तर पर किया जा सके। उन्होंने बताया कि मूंग की एमएच 1772 और एमएच 1142 किस्में कम अवधि में पककर तैयार होने, अच्छी उत्पादन क्षमता तथा विभिन्न रोगों के प्रति प्रतिरोधक क्षमता के कारण किसानों के लिए उपयोगी साबित होंगी।

इन अधिकारियों ने किए हस्ताक्षर

कुलपति प्रो बलदेव राज काम्बोज की उपस्थिति में विश्वविद्यालय की ओर से अनुसंधान निदेशक डॉ राजबीर गर्ग तथा कंपनी की तरफ से एग्जीक्यूटिव मेंबर नीरज अग्रवाल की हस्ताक्षर किए।

मूंग की वैरायटी एमएच-1772 व एमएच 1142 की खासियत

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने बताया कि मूंग की एमएच 1772 किस्म को भारत के उत्तर-पूर्वी मैदानी क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड, पश्चिम बंगाल और असम में खरीफ मौसम के दौरान खेती के लिए अधिसूचित किया गया है। इसी प्रकार मूंग की एमएच 1142 किस्म को भारत के उत्तर-पश्चिमी एवं उत्तर-पूर्वी मैदानी क्षेत्रों में खरीफ मौसम के दौरान खेती के लिए अधिसूचित किया गया है। यह दोनो किस्म अधिक उपज देने वाली एवं रोग प्रतिरोधी किस्म है, जो विभिन्न राज्यों में 63-70 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। पौधों की बौनी प्रकृति के कारण यह किस्में गिरने (लॉजिंग) के प्रति प्रतिरोधी है। इनकी फलियां चटककर बिखरने के प्रति भी प्रतिरोधी हैं। यह किस्में मूंगबीन पीला मोजेक विषाणु, वेब ब्लाइट, उड़द पति सिकुडन विषाणु तथा पत्ती मरोड़ विषाणु के प्रति प्रतिरोधी है। इसके अतिरिक्त इनमें सर्कोस्पोरा पत्ती धब्बा रोग, एन्थ्रेक्नोज, जड़ सड़न, जीवाणु पत्ती धब्बा रोग तथा मैक्रोफोमिना ब्लाइट के प्रति मध्यम स्तर की प्रतिरोधक क्षमता है। इन किस्मों में सफेद मक्खी, थ्रिप्स, फली के कीट तथा फली छेदक कीटों का प्रकोप भी पहले की किस्मों की तुलना में कम पाया जाता है। विभिन्न राज्यों में एमएच 1772 व एमएच 1142 की औसत उपज 13 व 12 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है, जबकि अधिकतम संभावित उपज 22 क्विंटल व 20 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक हो सकती है।

इस अवसर पर ओएसडी डॉ. अतुल ढींगड़ा, कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. रमेश गोयल, डॉ. एसके पाहुजा, डॉ. एसके तेहलान, मीडिया एडवाइजर डॉ. संदीप आर्य, डॉ. विरेन्द्र मोर, डॉ. योगेश जिंदल, डॉ. अनुराग व डॉ. पवन उपस्थित रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सच कहूं	19.11.2026	--	--

एचएयू की मूंग की दो उन्नत किस्मों का देशभर में होगा बीज उत्पादन, मैजेस्टिक इंपैक्स से करार

हिसार, 18 नवंबर (सच कहूँ/मुकेश)। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) की उन्नत मूंग किस्मों की पहुंच अब देश के पूर्वोत्तर राज्यों तक बढ़ेगी। विश्वविद्यालय ने मूंग की एमएच-1772 और एमएच-1142 किस्मों के बीज उत्पादन एवं वितरण के लिए गुवाहाटी की निजी कंपनी मजेस्टिक इंपैक्स के साथ समझौता किया है। दोनों किस्में कम अवधि में पकने, अधिक पैदावार देने और कई प्रमुख रोगों के प्रति प्रतिरोधक क्षमता के लिए विकसित की गई हैं। कुलपति प्रो. बलदेव राज काम्बोज की उपस्थिति में विश्वविद्यालय की ओर से अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग और कंपनी की ओर से एग्जीक्यूटिव मेंबर नीरज अग्रवाल ने समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने बताया कि



कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज के साथ कंपनी प्रतिनिधि व अधिकारी।

मूंग की एमएच-1772 किस्म उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड, पश्चिम बंगाल और असम में खरीफ मौसम के लिए अधिसूचित है। वहीं एमएच-1142 उत्तर-पश्चिमी और उत्तर-पूर्वी मैदानी क्षेत्रों में खरीफ की खेती के लिए अधिसूचित है। दोनों किस्में 63 से 70 दिन में पककर तैयार हो जाती हैं। इनकी औसत उपज क्रमशः 13 और 12 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है, जबकि अधिकतम संभावित उपज 22 और 20 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक है। उन्होंने बताया कि पौधों की बौनी प्रकृति के कारण फसल गिरने और फलियां चटक कर बिखरने की आशंका कम रहती है। ये किस्में पीला मोजेक विषाणु, चेब ब्लाइट सहित कई प्रमुख रोगों के प्रति प्रतिरोधी हैं। वहीं सफेद मक्खी, थ्रिप्स और फली छेदक जैसे कीटों का प्रकोप भी इनमें अपेक्षाकृत कम पाया गया है। इस अवसर पर ओएसडी डॉ. अतुल ढींगड़ा, कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. रमेश गोयल, डॉ. एसके पाहुजा, डॉ. एसके तेहलान, मीडिया एडवाइजर डॉ. संदीप आर्य सहित विश्वविद्यालय के अन्य अधिकारी मौजूद रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार,
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	19.11.26	5	1-5

पहल • हकृवि ने मजेस्टिक इंपैक्स के साथ किया एमओयू, औसत पैदावार 12 से 13 क्विंटल प्रति हेक्टेयर

63 से 70 दिन में तैयार होंगी मूंग, 22 क्विंटल तक पैदावार

भास्कर न्यूज | हिसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित उन्नत किस्मों के बीजों की मांग देशभर में लगातार बढ़ रही है। इसी कड़ी में निजी क्षेत्र की गुवाहाटी स्थित कंपनी मजेस्टिक इंपैक्स ने विश्वविद्यालय की उन्नत किस्मों के बीजों के लिए एक अहम समझौता किया है।

एचएयू ने मूंग की एमएच-1772 और एमएच-1142 किस्मों को लेकर यह एमओयू किया है। एचएयू कुलपति प्रो. बलदेव राज काम्बोज की उपस्थिति में विश्वविद्यालय की ओर से अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग और कंपनी की तरफ से एगजीक्यूटिव मेंबर नीरज अग्रवाल ने समझौते पर हस्ताक्षर किए। नीरज अग्रवाल ने बताया कि जल्द ही बीज उत्पादन का कार्य आरंभ कर दिया जाएगा।



एचएयू कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज के साथ कंपनी प्रतिनिधि व अधिकारी।

देश के उत्तर पूर्वी मैदानी क्षेत्र के लिए बेहतर

हकृवि के अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने बताया कि मूंग की एमएच 1772 किस्म को भारत के उत्तर-पूर्वी मैदानी क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड, पश्चिम बंगाल और असम में खरीफ मौसम के दौरान खेती के लिए अधिसूचित किया गया है। इसी प्रकार मूंग की एमएच-1142 किस्म को भारत के उत्तर-पश्चिमी एवं उत्तर-पूर्वी मैदानी क्षेत्रों में खरीफ मौसम के दौरान खेती के लिए अधिसूचित किया गया है।

खासियत; बौने पौधों वाली किस्मों में फसल गिरने व फलियां चटकने का खतरा नहीं

▪ **कम समय और बंपर पैदावार** : ये दोनों किस्में महज 63 से 70 दिनों में पककर पूरी तरह तैयार हो जाती हैं। इनकी औसत पैदावार 12 से 13 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है, जबकि अधिकतम क्षमता 20 से 22 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक है।

▪ **गिरने और चटकने से सुरक्षा** : पौधों की बौनी प्रकृति के कारण ये फसलें हवा आदि से गिरने और पकने के बाद फलियों के चटककर बिखरने के प्रति पूरी तरह सुरक्षित हैं।

▪ **रोग और कीट प्रतिरोधक क्षमता** : ये किस्में पीला मोजेक वायरस, वेब ब्लाइट, पत्ती मरोड़ जैसे गंभीर रोगों के प्रति मजबूत प्रतिरोधक क्षमता रखती हैं। इसके अतिरिक्त इनमें सर्कोस्पोरा पत्ती धब्बा रोग, एन्थ्रेक्नोज, जड़ सड़न , जीवाणु पत्ती धब्बा रोग तथा मैक्रोफोमिना ब्लाइट के प्रति मध्यम स्तर की प्रतिरोधक क्षमता है। इसके अलावा सफेद मक्खी, थ्रिप्स और फली छेदक जैसे कीटों का प्रकोप भी इनमें पारंपरिक किस्मों की तुलना में काफी कम देखा गया है।

बीजों का व्यापक स्तर पर उत्पादन सुनिश्चित हो सके

एचएयू ने मूंग की वेरायटी एमएच-1772 व एमएच 1142 को लेकर मजेस्टिक इंपैक्स के साथ एमओयू किया है ताकि गुणवत्तापूर्ण बीजों का व्यापक स्तर पर उत्पादन और वितरण सुनिश्चित हो सके।''
प्रो. बीआर काम्बोज, कुलपति, हकृवि।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार,
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	19-11-26	5	2-6

हकृवि की उन्नत मूंग किस्मों के लिए निजी कंपनी से समझौता

जागरण संवाददाता • हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित उन्नत किस्मों के बीजों की मांग निरंतर बढ़ रही है। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित अधिक उत्पादन क्षमता, बेहतर गुणवत्ता और रोग प्रतिरोधक गुणों से युक्त किस्में किसानों के बीच लोकप्रिय हो रही हैं। देशभर के किसानों तक इन उन्नत किस्मों के बीज पहुंचाने के उद्देश्य से विश्वविद्यालय विभिन्न निजी बीज कंपनियों के साथ समझौता ज्ञापन कर रहा है। इसी कड़ी में निजी क्षेत्र की कंपनी मजेस्टिक इंपेक्स गुवाहाटी ने भी विश्वविद्यालय की उन्नत किस्मों के बीजों के संबंध में समझौता किया है।

कुलपति प्रो. बलदेव राज काम्बोज ने बताया कि विश्वविद्यालय किसानों को जलवायु अनुकूल, अधिक उत्पादन देने वाली तथा रोग प्रतिरोधी फसल किस्में उपलब्ध करवाने के लिए निरंतर अनुसंधान एवं विकास कार्य कर रहा है। विश्वविद्यालय का प्रयास है कि अनुसंधान के माध्यम से विकसित उन्नत किस्मों का लाभ देश के अधिक से अधिक किसानों तक पहुंचे। इसके लिए निजी बीज कंपनियों के साथ समझौते किए जा रहे हैं, ताकि उन्नत किस्मों के गुणवत्तापूर्ण बीजों का उत्पादन एवं वितरण व्यापक स्तर पर किया जा सके। उन्होंने बताया कि मूंग की एमएच 1772 और एमएच 1142 किस्में कम अवधि में पककर तैयार होने, अच्छी उत्पादन क्षमता तथा विभिन्न रोगों के प्रति प्रतिरोधक क्षमता के कारण किसानों के लिए उपयोगी साबित होंगी। इस दौरान कुलपति प्रो बलदेव राज काम्बोज की उपस्थिति में विश्वविद्यालय की ओर से अनुसंधान निदेशक डा. राजबीर गर्ग तथा कंपनी की तरफ से एग्जीक्यूटिव मैंबर नीरज अग्रवाल की हस्ताक्षर किए।



कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज के साथ कंपनी के प्रतिनिधि व अधिकारी।

मूंग की वैरायटी एमएच-1772 व एमएच 1142 की खासियत

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डा. राजबीर गर्ग ने बताया कि मूंग की एमएच 1772 किस्म को भारत के उत्तर-पूर्वी मैदानी क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड, पश्चिम बंगाल और असम में खरीफ मौसम के दौरान खेती के लिए अधिसूचित किया गया है। इसी प्रकार मूंग की एमएच 1142 किस्म को भारत के उत्तर-पश्चिमी एवं उत्तर-पूर्वी मैदानी क्षेत्रों में खरीफ मौसम के दौरान खेती के लिए अधिसूचित किया गया है। यह दोनों किस्म अधिक उपज देने वाली एवं रोग प्रतिरोधी किस्म है, जो विभिन्न राज्यों में 63-70 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। पौधों की बौनी प्रकृति के कारण यह किस्में गिरने (लाजिंग) के प्रति प्रतिरोधी है। इनकी फलियां चटककर बिखरने के प्रति भी प्रतिरोधी है। यह किस्में मूंगबीन पीला मोजेक विषाणु, वेब ब्लाइट, उड़द पति सिकुड़न विषाणु तथा पत्ती मरोड़ विषाणु के प्रति प्रतिरोधी है। इसके अतिरिक्त इनमें सर्कोस्पोरा पत्ती धब्बा रोग, एन्थ्रेक्नोज, जड़ सड़न, जीवाणु पत्ती धब्बा रोग तथा मैक्रोफोमिना ब्लाइट के प्रति मध्यम स्तर की प्रतिरोधक क्षमता है। इन किस्मों में सफेद मक्खी, थ्रिप्स, फली के कीट तथा फली छेदक कीटों का प्रकोप भी पहले की किस्मों की तुलना में कम पाया जाता है। विभिन्न राज्यों में एमएच 1772 व एमएच 1142 की औसत उपज 13 व 12 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है, जबकि अधिकतम संभावित उपज 22 क्विंटल व 20 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक हो सकती है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार,
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	19.1.26	3	2-6

मूंग की नई किस्मों से खेतों में समृद्धि खिलने की आस

एचएयू ने गुवाहाटी की कंपनी से किया समझौता, 63 से 70 दिन में तैयार हो सकेगी फसल

माई सिटी रिपोर्टर

हिसार। कम समय में पकने और बेहतर पैदावार देने वाली मूंग की उन्नत किस्में किसानों के लिए समृद्धि द्वार खोलेगी। इसी उम्मीद को नई ताकत देने की दिशा में चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) ने कदम बढ़ाया है।

विश्वविद्यालय ने मूंग की दो उन्नत किस्मों एमएच 1772 और एमएच 1142 के बीज उत्पादन एवं उपलब्धता के लिए गुवाहाटी की कंपनी मजेस्टिक इंपैक्स के साथ समझौता किया है। दावा है कि रोगों से लड़ने की क्षमता और अधिक उपज की विशेषता वाली यह किस्में किसानों के लिए खेती को अधिक लाभकारी बनाने में मददगार साबित हो सकती हैं।



कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज के साथ कंपनी प्रतिनिधि व अधिकारी। स्रोत : संस्थान

समझौते पर विश्वविद्यालय की ओर से अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग और कंपनी की ओर से कार्यकारी सदस्य नीरज अग्रवाल ने कुलपति की उपस्थिति में हस्ताक्षर किए। गर्ग ने बताया कि एमएच 1772 को उत्तर-पूर्वी मैदानी क्षेत्र के उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड, पश्चिम बंगाल और असम में खरीफ मौसम के लिए अधिसूचित किया गया है। एमएच 1142 उत्तर-पश्चिमी एवं उत्तर-पूर्वी मैदानी क्षेत्रों में खरीफ मौसम के लिए अधिसूचित है।

दोनों किस्में 63 से 70 दिनों में पककर तैयार हो जाती हैं। इनकी औसत उपज क्रमशः 13 और 12 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तथा अधिकतम संभावित उपज 22 और 20 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। बौने पौधों के कारण इनमें गिरने और फलियों के चटककर बिखरने की समस्या कम है।

यह पीला मोजेक विषाणु, वेब ब्लाइट, उड़द पत्ती सिकुड़न विषाणु और पत्ती मरोड़ विषाणु के प्रति प्रतिरोधी हैं। साथ ही कई अन्य रोगों के प्रति मध्यम प्रतिरोधक क्षमता रखती हैं। इस अवसर पर ओएसडी डॉ. अतुल ढींगड़ा, कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. रमेश गोयल, डॉ. एसके पाहुजा, डॉ. एसके तेहलान उपस्थित रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार,
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भूमि	19-1-26	12	2-6

एमएच 1772 और एमएच 1142 किस्में 63 से 70 दिन में होंगी तैयार

हकृवि की मूंग की दो उन्नत किस्मों का होगा विस्तार, निजी कंपनी से समझौता

22 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक उपज की क्षमता, पौधे गिरने की समस्या होगी कम

हरिभूमि न्यूज ▸▸ हिसार



हिसार। कुलपति प्रो. बीआर कम्बोज के साथ समझौते के दौरान कंपनी प्रतिनिधि एवं विश्वविद्यालय के अधिकारी। फोटो : हरिभूमि

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय की ओर से विकसित मूंग की उन्नत किस्मों के बीज अब देश के अधिक से अधिक किसानों तक पहुंच सकेंगे। इस दिशा में विश्वविद्यालय ने निजी क्षेत्र की कंपनी मजेस्टिक इंपैक्स, गुवाहाटी के साथ समझौता ज्ञापन किया है। इसके तहत विश्वविद्यालय की मूंग की एमएच 1772 और एमएच 1142 किस्मों के गुणवत्तापूर्ण बीजों का उत्पादन एवं वितरण व्यापक स्तर पर किया जाएगा। दोनों किस्में कम अवधि में पकने, अधिक उत्पादन क्षमता और विभिन्न रोगों के प्रति प्रतिरोधक गुणों के कारण किसानों के लिए लाभकारी साबित हो सकती हैं।

कुलपति प्रो. बीआर कम्बोज ने कहा कि विश्वविद्यालय जलवायु अनुकूल, अधिक उत्पादन देने वाली और रोग प्रतिरोधी फसल किस्में विकसित करने के लिए निरंतर अनुसंधान एवं विकास कार्य कर रहा है। विश्वविद्यालय का प्रयास है कि वैज्ञानिकों द्वारा विकसित उन्नत किस्मों का लाभ देशभर के किसानों तक पहुंचे। इसके लिए निजी बीज कंपनियों के साथ समझौते किए जा रहे हैं, ताकि गुणवत्तापूर्ण बीजों का उत्पादन और वितरण बड़े स्तर पर सुनिश्चित हो सके। उन्होंने बताया कि मूंग की एमएच 1772 और एमएच 1142 किस्में कम समय में पककर तैयार होने के साथ अच्छी उत्पादन क्षमता और रोग प्रतिरोधक गुणों से युक्त हैं। कुलपति प्रो. बीआर कम्बोज की उपस्थिति में विश्वविद्यालय की ओर से अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग तथा कंपनी की ओर से एग्जीक्यूटिव मेंबर नीरज अग्रवाल ने समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। इस अवसर पर ओएसडी डॉ. अतुल ढींगड़ा, कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. रमेश गोयल, डॉ. एसके पाहुजा, डॉ. एसके तेहलान, मीडिया एडवाइजर डॉ. संदीप आर्य, डॉ. विरेन्द्र मोर, डॉ. योगेश जिंदल, डॉ. अनुराग और डॉ. पवन उपस्थित रहे।

63 से 70 दिन में पककर होंगी तैयार

अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने बताया कि मूंग की एमएच 1772 किस्म को उत्तर-पूर्वी मैदानी क्षेत्र के उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड, पश्चिम बंगाल और असम में खरीफ मौसम के लिए अधिसूचित किया गया है। वहीं एमएच 1142 किस्म उत्तर-पश्चिमी एवं उत्तर-पूर्वी मैदानी क्षेत्रों में खरीफ मौसम के लिए अधिसूचित है। दोनों किस्में 63 से 70 दिनों में पककर तैयार हो जाती हैं। इनकी औसत उपज क्रमशः 13 और 12 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है, जबकि अधिकतम संभावित उपज 22 और 20 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक है। उन्होंने बताया कि दोनों किस्मों के पौधे बौने होने के कारण गिरने की समस्या कम रहती है और फलियां चटककर बिखरने के प्रति भी प्रतिरोधी हैं। इनमें मूंगबीन पीला मोजेक विषाणु, वेब ब्लाइट, उड़द पत्ती सिकुड़न विषाणु और पत्ती मरोड़ विषाणु के प्रति प्रतिरोधक क्षमता है। इसके अलावा सर्कोस्पोरा पत्ती धब्बा, एन्थेक्नोज, जड़ सड़न, जीवाणु पत्ती धब्बा और मैक्रोफोमिना ब्लाइट रोगों के प्रति मध्यम स्तर की प्रतिरोधक क्षमता पाई गई है। सफेद मक्खी, थ्रिप्स, फली के कीट और फली छेदक का प्रकोप भी पहले प्रचलित किस्मों की तुलना में कम पाया गया है।